नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी विवि में 'वर्तमान किसान नीति और कृषक समस्या' पर व्याख्यान

सरकार की मदद के बगैर खेती संभव नहीं -विजय जावंधिया

वर्धा दि.19 अक्तूबर 2015: विकसित देशों में किसानों को सबसिडी दी जाती है। वहां की सरकारें खेती के लिए आगे आती है। भारत में भी किसानों की समस्या हल करने के लिए सरकार की मदद

की आवश्यकता है। सरकार की मदद के बगैर खेती संभव ही नहीं है। उक्त बातें किसान नेता विजय जावंधिया ने कही। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के विकास एवं शांति अध्ययन विभाग के द्वारा जयप्रकाश नारायण जयंती व्याख्या श्रृंखला के अंतर्गत वर्तमान किसान नीति और

कृषक समस्या पर विजय जावंधिया का विशेष व्याख्यान रखा गया था, इस अवसर पर वे बोल रहे

थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। विकास एवं शांति अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी भी मंचपर उपस्थित थे।

विषय को व्याख्यायित करते हुए विजय जावंधिया ने कहा कि 1947 के पूर्व देश को सोने की चिडिया का देश कहा जाता था और तब भारत दुनिया के व्यापार में आगे था। यहां के मसाले के बदले सोना आता था। भारत का कपास मँचेस्टर जाता था। उन्होंने कहा कि किसान नीति में अनेक

खामियां होने की वजह से किसानों को उनके उत्पादों के वाजीब दाम नहीं मिलते है और वे कम दामों पर अपने उत्पाद बेचते हैं। उपर से वैश्विक आर्थिक शक्तियां गुमराह करती है। हाल के दिनों में किसान आंदोलनों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि 1980 से 1990 तक का समय किसान दशक से जाना जाता था। परंतु आज किसानों के आंदोलनों को दबाया जा रहा है और राजनीति की जीत होकर किसान आंदोलन की हार हो रही है, आंदोलन जाति आंदोलन में तब्दील होते जा रहे है। उन्होंने कहा कि किसान प्रौद्योगिकी के चक्रव्यूह में फंस गया है और यही कारण है कि उसकी खेती घाटे का सौदा साबित हो रही है। उन्होंने किसान क्रेडिट कार्ड, किसान आत्महत्या, बी.टी. कपास आदि विषयों का जिक्र अपने व्याख्यान में करते हुए उसके सामाजिक, आर्थिक पक्ष पर विस्तार से प्रकाश ड़ाला।

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि आज के गांव कमजोर होते जा रहे हैं और किसान की खेती उसके विनाश का कारण बनती जा रही है। उन्होंने कहा कि गांवों का समृद्ध जीवन पुन: लौटाने के लिए खेती को समृद्ध करने की आवश्यकता है। उन्होंने विजय जावंधिया का उनके सारगर्भित व्याख्यान के लिए उनके प्रति आभार जताया और कहा कि उनके चिंतन का लाभ विश्वविद्यालय समय-समय पर लेगा। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी ने किया। आभार सहायक प्रोफेसर राकेश मिश्र ने माना। इस अवसर पर अध्यापक, अधिकारी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।